अंक ३९★ जुलाई-२०१०

श्री स्वामिनारायण

मुल्य रु.५-००

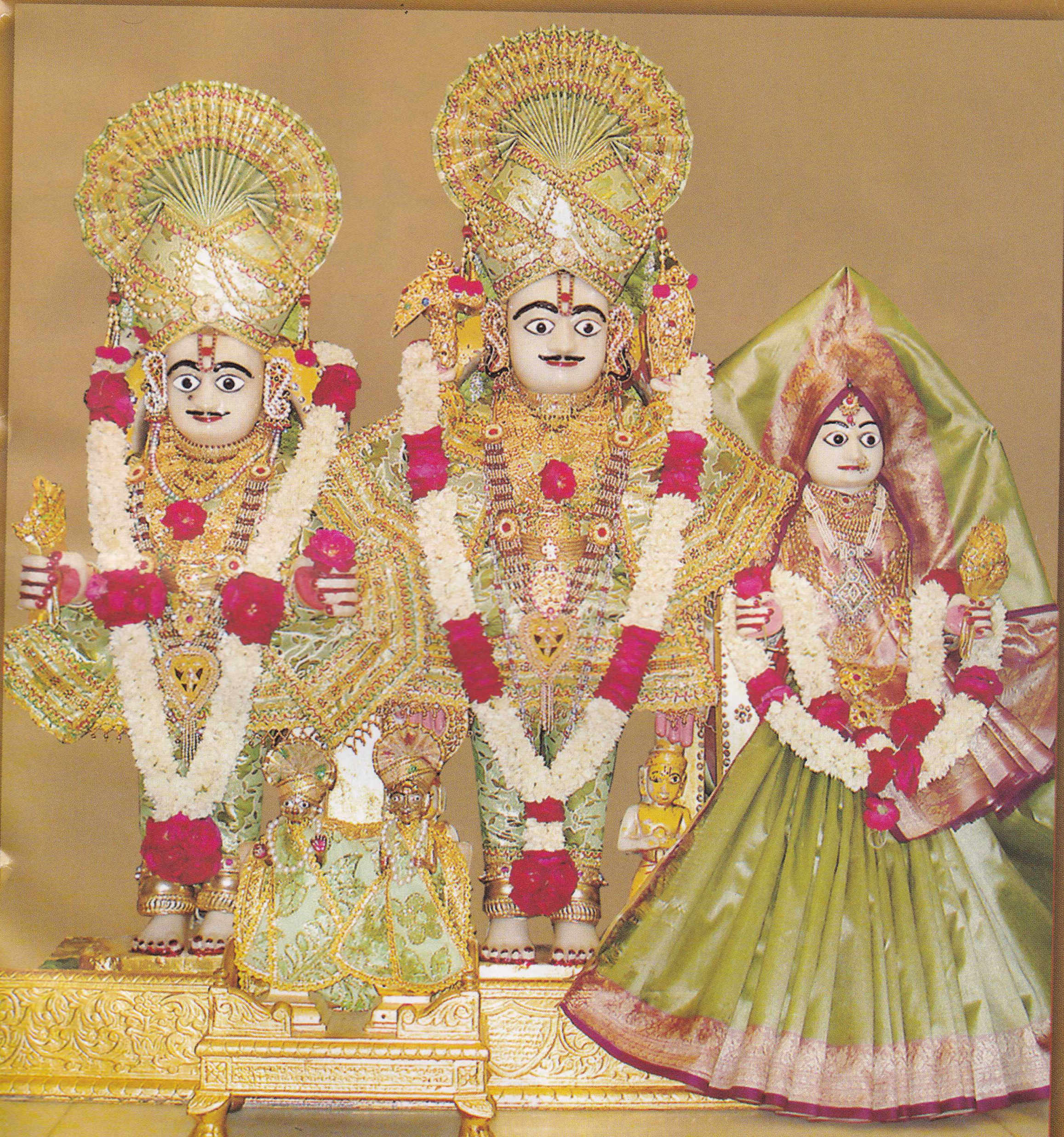

श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज जेतलपुरधाम

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

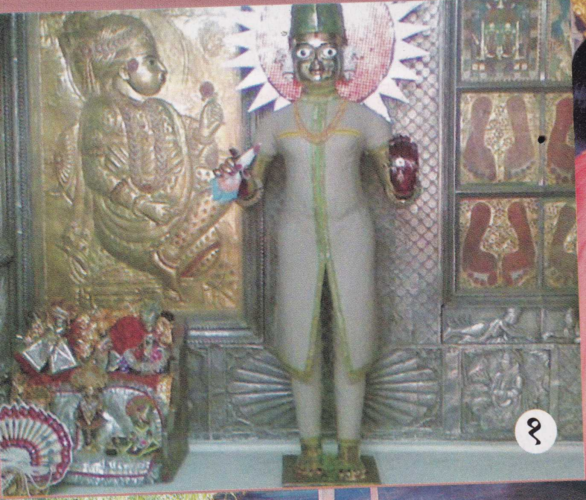

(१) वडनगर मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का चन्दन चर्चित दर्शन

(२) ईडर मंदिर में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

(३) ईडर मंदिर में यज्ञकी पूजन विधी करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

(४) ईडर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर यजमान परिवार को आशीर्वाद देते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में ईडर मंदिर के महंत स्वामी, जे.के. स्वामी, छोटे पी.पी. स्वामी

(५) हरिद्वार श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार विधिपुरस्सर महाभिषेक आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

(६) हरिद्वार मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार

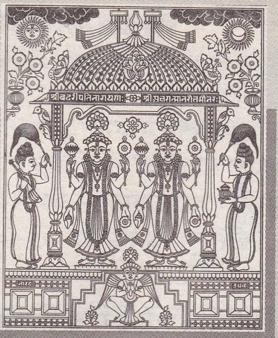

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ४ | अंक : ३९ | जुलाई-२०१०

अ नु क्र म णि का

१. अस्मदीयम् २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ३

३. श्री नरनारायणदेव माहात्म्य ४

४. सर्वोपरिकारकाय नमः ५

५. श्रीहरि के छठे तथा सातवे वंशज के मुख से अमृत वचन ७

६. रहो एकादश नियम में, करो हरिपद प्रीति परस्त्रिया संग को त्याग ९

७. बिजापुर की वजीबा १०

८. अत्यंत भव्य तथा दिव्य ढंग से संपन्न भुज के श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर का महामहोत्सव १२

९. सत्संग बालवाटिका १४

१०. भक्ति सुधा १६

११. सत्संग समाचार १९

संपादकीयम्

ईश्वर की गति न्यारी है। परमात्मा की समानता कोई कर नहीं सकता। वर्तमान समय में वर्षाऋतु प्रारंभ है। फिर भी आज तक हम सभी गर्मी का अनुभव कर रहे हैं। हवामान के कार्य कर्ताओं द्वारा वारंवार सूचना देने का कोई मूल्य नहीं रहा। देश के बड़े बड़े ज्योतिषियों की ज्योतिष विद्या भी काम में नहीं आयी। जगत के कर्ता-हर्ता जो चाहे वहीं होता है। उस में मनुष्य का कुछ चलता नहीं है।

एकवार गोपालानंद स्वामी गढपुर में थे उसी समय वाड़ोक देश के हरि भक्त प्रभु का दर्शन करने आये, वे महाराज से पूछे कि महाराज ? वरसात कब होगी ? तब महाराजने कहा मैं ज्योतिष नहीं पढा हूँ। गोपालानंद स्वामी ज्योतिष पढे हैं उनसे पूछिये। हरिभक्त गोपालानंद स्वामी के पास आये और पूछे स्वामी ! बरसात कब होगी। स्वामीने कहा परसों खूब बरसात होगी। स्वामी के कथनानुसार तीसरे दिन खूब पानी गिरा। इस तरह समर्थ संतो के वचनो में ताकत थी। वे ग्रहण की प्रक्रिया को भी रोक सकते थे। उनके सामर्थ्य की क्या बात करना। हम सभी उन्ही के आश्रित है। हम सभी को इसका ख्याल रहना चाहिये। ऐसे भगवान हमें मिले हैं। आप १२ घंटा २४ घंटा स्वामिनारायण मंत्र की अखंड धून करिये फिर उसका परिणाम देखिये।

आगामी गुरुपूर्णिमा के पुण्य प्रसंग पर हम सभी के धर्मगुरु प्राण प्यारे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके गुरुऋण से मुक्त बनें। यह अपना धर्म हैं। हम सभी के गुरु मात्र धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री है। जो हमारे इष्टदेव हमें परंपरा में दिये है। इसलिये उन्हीं के पूजन में हम सभी की नैतिकता है।

अब चातुर्मास का आषाढ शुक्ल-११ से प्रारंभ होगा। हम कैसा नियम लें, कितने प्रकार का ले, इसकी चर्चा श्रीहरिने शिक्षापत्री में की है। इसलिये उन ८ प्रकार के नियमों में से कोई एक नियम चार महिने तक लेकर श्रीहरि का एक निष्ठा से भजन करें। इसके अलांवा हमें और क्या करना है ? दूसरा कुछ करने के लिये शेष रहता ही नहीं है। अस्तु

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१०)

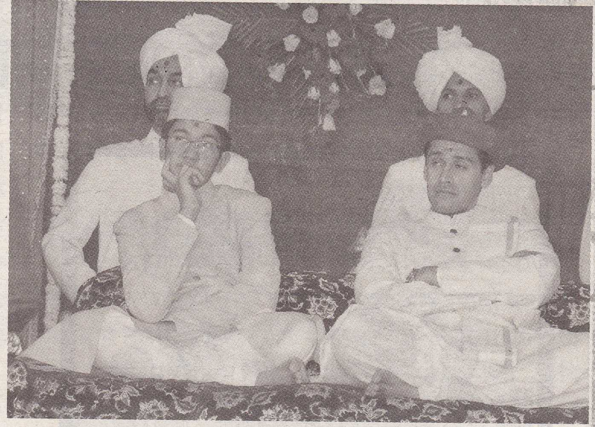

१. मदनपुर (कच्छ) पदार्पण।

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागांव (ता. कपडवंज) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर खेवड़िया (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी बापूनगर (बहनो के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री स्वामिनारायण मंदिर खावड़ मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रांतिज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।
श्री संजयकुमार मूलचंददास मोदी के यहाँ पदार्पण, न्यू राणीप।

१५-१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राजस्थान) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठ (धोलकादेश) पारायण प्रसंग पर तथा रजत जयंति प्रसंग पर पदार्पण।

२०. श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१-२२. सर्वोपरि धाम छपैया श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३-२४. कच्छ(भुज) पदार्पण।

२५. श्री नरनारायणदेव का केशर स्नान अपने वरद हाथों से किये।

२६. संत महादीक्षा विधिअपने वरद् हाथों से किये।

२७. महेसाणा एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण।

२८. सापावाडा गाँव में पदार्पण।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट
www.swaminarayan.in
भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५
● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १९-३० ● शयन आरती २०-३०

श्री नरनारायणदेव माहात्म्य

- शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी
गुरु महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी

क्रमशः

श्रीमद् भागवत में लिखा है कि श्री नरनारयणदेव पृथ्वी के भारको उतारने के लिये यदुवंश में श्रीकृष्ण के रुप में तथा कुरुवंश में अर्जुन के रुप में अवतरित हुये थे। वामनपुराण में प्रहलाद तथा नरनारायण के युद्ध का वर्णन है। जब प्रहलाद भगवान को जीत नहीं पाया तो स्तुति करने लगा। हे प्रभु जगत में आपको कौन जीत सकता है। आपसे बड़ा कौन है। हे नारायण आप ही पीताम्बर धारी भगवान विष्णु हैं ? आप ही पुंडरीकाक्ष है। वामन, नृसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण ए सभी अवतार आपके ही हैं। हजारो रुप में प्रत्यक्ष आप विराजमान है।

इस तरह शास्त्रों में भगवान नरनारायण का वर्णन मिलता है। प्रत्येक शास्त्रों में नरनारायण की व्युत्पत्ति की गयी है। प्रत्येक स्थानो में अलग-अलग सुंदर अर्थ किये गये हैं।

नराणामयनञ्चापिः ततो नारायणः स्मृतः ।

(महाभारत)

श्री नरनारायण भगवान नरों (मनुष्यों) के अयन अर्थात् आश्रय रुप हैं। इसीलिए इन्हें नारायण कहा गया है। भागवत में ब्रह्माजी ने कहा कि हे भगवान मै आपसे जन्म नहीं लिया। आप सभी कारणों के कारण है। सभी प्राणियों की आत्मा है। इसीलिये आप नारायण है। आप समग्र नर अर्थात् परमात्मा, इन्हीं परमात्मा से उत्पन्न होने के कारण आश्रय होने से तथा जल का आश्रय होने से आप नारायण है। हे भगवान जल में आप सत्यरुप से रहते हैं और मैं कमल की नाभी में सौ वर्ष तक घूमा फिर भी आपका दर्शन नहीं हो सका। इतना ही नहीं हृदय में भी आपका दर्शन नहीं हुआ। जब मैं तप कर रहा था तब वह स्वरुप दिखाई दिया था। बाद में वह स्वरुप दृष्ट नहीं हुआ। यह सब आपकी माया है। इसलिये आप की मूर्तिका कोई माप नहीं है।

इस तरह ब्रह्माजी ने भगवान नरनारायणदेव को सर्वोपरि तथा अलौकिक - अनादि कहा है।

आपो नरा इति प्रोक्ता आपो वै नर सूनवः ।
अयनं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायण स्मृताः ॥

(मनुस्मृति : १-१०)

नर परमात्मा से उत्पन्न तत्वों को विद्वान नार कहते हैं। उस तत्व का जिसने आश्रय किया उसे नारायण कहते हैं। जब परमात्मा से उत्पन्न होने के कारण उसे भी नारा कहते हैं। उस जल को जिसने अपना अयन (आश्रय) बनाया वही नारायण है।

(क्रमशः)

सर्वोपरिकारकाय नमः

सर्वोपरिकारकाय नमः सर्वोपरिकारकाय नमः

- नारायणमुनि स्वामी गुरु महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद)

शतानंद स्वामीने जैसी भगवान की लीलाए थी, जैसा भगवान का जीवन था, जैसा उनका आचरण था उसी प्रकार से शतानंद स्वामीने महाराज के नामकरण किये थे । जिसे हम जनमंगल नामावली कहते हैं । जिसमें महाराज का एक नाम है 'सर्वोपकारकाय नमः' । प्रभु जीवप्राणी के प्रति उपकारी है । क्योंकि भगवान किसी भी प्रकार की अपेक्षा बिना, निःस्वार्थ, प्रभु उपकार करते हैं । परंतु जीव प्राणीमात्र का तो स्वभाव है, कि कुछ भी कार्य करे तो थोडी़ बहुत अपेक्षा का अर्थ होता है इच्छा, आशा रखना तो इस कलयुग के जीव का स्वभाव है ''फल की इच्छा के बिना कर्म तो हो नहीं सकता ।'' हम तो ठीक परंतु छोटा बच्चा जब गिर जाता है तो तब तक नहीं रोता जब तक वह आस-पास यह न देख ले कि उसे रोते हुए देखने वाला कोई है भी या नहीं । अगर आस-पास कोई नहीं दिखाई देता तो वह नही रोता है । ओर कोई होता है तो तुरंत रोना शुरु कर देता है, क्योंकि किसी को पता चलेगा तो वह मुझे चोकलेट देगा और कोई नही होगा तो रोने से क्या फायदा । उसी प्रकार जगत का यह जीव कार्य तो करता है परंतु उसके पीछे स्वार्थ छुपा होता है । परंतु प्रभु तो सभी पर उदारभाव से उपकार करते हैं ।

द्रष्टांत : महाराज उत्तर गुजरात के अंदर विचरण कर रहे थे साथ में संतगण भी थे संतो को कहा कि आप विसनगर के आस-पास के गांव में घूमिये । हम विसनगर से थोड़ी दूर देवडा नामक गाँव है । वहाँ से आगे जाएगें । महाराज देवड़ा गांव की सरहद में पहुच थ । उसा दवड़ा गाव म ज्ञाति से वणिक तथा हरखशा नामक एक भक्त रहता था । उसने महाराज को देखा इस कारण उसे खुशी हुई । आज उसका नाम सार्थक हुआ था । मेरे गाँव की सरहद में ही मुझे भगवान का दर्शन हुहा और उसने महाराज से कहा प्रभु मेरे घर पधारिए महाराजने कहा हरखशा गाँव में आप एक ही भक्त है इसीलिए आपको दर्शन हो गये । हे महाराज दोपहर का समय होने आया है और ऐसी धूप में जाना ठीक नहीं है । महाराजने कहा आपकी परिस्थिति साधारण है और आप हमारे लिए खर्च करें यह ठीक नहीं है । श्रीजी महाराजने शर्त रखी कि आपकी स्थिति हम जानते ही है परंतु आपके घर हम रोटी और दाल के अलावाँ कुछ नहीं ग्रहण करेंगे । प्रभु दो पार्षदो के साथ उनके घर पधारे । हरखशाने प्रभु का स्वागत किया । और अपनी धर्मपत्नी से महाराज की शर्त की बात कही ।

परंतु पत्नी बहुत समझदार थी । उन्होंने कहा कि जब हमारे घर कोई संबंधी आता है तो हम कुछ भी करके उसे कुछ तो अच्छा भोजन करवातें ही है । और ये तो हमारे आत्म संबंधी है भला हम इन्हें कैसे दाल-रोटी का भोजन करवाये । आप ऐसा कीजिये यह दो तांबे के बर्तन को बेचकर उनमें से जो धन आये उसका सीधा ले आइए । हम महाराज को खीर तथा मालपूआ का भोजन करवायेंगे । हरखाशने कहा परंतु भगवान नहीं मानेंगे । उनकी धर्मपत्नी ने कहा प्रभु का दिल बहुत बड़ा है वह हमारी भावनाओ को जरुर समझेंगे . भोजन तैयार होते ही भगवान को भोजन परोसा गया । थाली में मालपूवा तथा बड़ी

सी कटोरी में भरकर खीर परोसी। यह देखते ही प्रभु बोले हमें नहीं खाना है। हमने यह निश्चित किया था कि आपकी परिस्थिति दुर्बल है तो हम सिर्फ रोटी दाल ही खाएंगे। यह सुनते ही हरखशा बोले हे महाराज ! सबकुछ आपकी शर्त के अनुसार ही हुआ है। यह मालपुवा ही रोटी ओर खीर ही दाल है। ''काली रोटी ओर सफेद दाल।'' हे प्रभु यह रोटी ओर दाल ही है। यह मानकर स्वीकार्य कर लीजिए। महाराजने कहा आप तो बहुत ज्ञानी हो गये हैं। हम तो मानते हैं कि आप गरीब है परंतु आप तो शाहुकार निकले। अब आप हमें पांचसौ रुपये देंगे तभी हम भोजन ग्रहण करेंगे। यह बात हरखशाने अपनी पत्नी को बताई और कहा अब क्या करें तो उसकी पत्नीने कहा जाकर यह मकान गीरवीं रख आओ। इसी को ही तो कहते हैं स्नेहयुक्त समर्पण। उसे यह चिंता नहीं थी की पांचसौ रुपये नहीं भरे जाएगे तो यह मकान खाली करना पड़ेगा। पांचसो रुपिये लेकर दो पार्षदो के साथ भोजन करने बैठ गए। और सभी बहुत प्रसन्न हो गये। प्रभुने आज्ञा की, कि यह पांचसो रुपये लेकर हमारे साथ चलो। ओर भक्तस्वरुप हरखशा उनके साथ चल दिये। महाराज विसनगर से घूमते-घूमते दक्षिण गुजरात में पधारे। वहाँ अरहर अपने पकी हुई थी। उस समय एक रुपये की चार मन अरहर मिलती थी। हरखशा भक्त द्वारा महाराजने पांचसौ रुपये की अरहर की दाल खरीदवाकर गाडी में भरा दी। हरखशा से कहा तुम्हारा घर बहुत बड़ा है। यह सभी अरहर तुम तुम्हारे घर में भर दो। हमें जब चाहिए तब मंगवालेंगे। ओर सारा सामान देवड़ा गाँव में अपने घर के कमरें में भरा दिया। उसमें से एक दाना भी उपयोग में नहीं लिया जाए उसका ध्यान रखने लगें। अडसढ़ की साल के बाद अठत्तर की साल में भयंकर दुष्काल पड़ा। जिसका इतिहास में भी वर्णन किया गया है। मनुष्य भूख के कारण पशु की भांति मरने लगे। ऐसा कातिल दुष्काल था कि पानी की एक बुंद भी नहीं मिलती थी। उस समय हरखशाने महाराज को चिठ्ठी लिखी कि महाराज वर्षा की एक बुंद भी नहीं गिरी। आपकी अरहर घर में पडी है। मुझे डर लग रहा है कि कोई चोरी कर लेगा तो ? इस कारण दयावश उसे मंगवा लें तो अच्छा है। श्रीजी महाराजने प्रतिउत्तर दिया कि वह अरहर हमारी नहीं है वह आपकी है। सारी बाँट दो दुःखी लोगो को दान में दे दो। सब की मदद करो। उस समय अरहर का भाव आठ रुपये में एक मन था। और उन्होंने बाजार में उस भाव से बांटना शुरु किया। महाराज की आज्ञा अनुसार गरीबो में भी दान किया प्रभु के मुख बोले गये शब्दानुसार वे सही अर्थ में शाहुकार बन गए। लाखोपति बन गये। उनका जीवन सुखी हो गया। द्वारकाधीशने सुदामा के घर एक मुठ्ठी चावल खाकर उनके लिए सोनेका महल खड़ा कर दिया। उसी प्रकार स्वामिनारायण भगवानने इस भक्त के घर भोजन कर उसे लाखोपति बना दिया। उसी प्रकार स्वार्थ बिना अपेक्षा बिना सभी पर उपकार करने का स्वभाव होने के कारण श्रीहरि का नाम सर्वोपकारकाय नमः ऐसा स्वामीने रखा है।

नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये
जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.com
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com

श्रीहरि के छठे तथा सातवे वंशज के मुख से अमृत वचन

- गोरधनभाई सीतापार (हीरावाडी-बापूनगर)

सर्वावतारी सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से प.पू. बडे महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री के आशीर्वाद से तथा कच्छ-भुज तथा समग्र गुजरात या समग्र भारत वर्ष का उदाहरण रुप कलाकृतियों से युक्त सफेद संगमरमर पत्थर से निर्मित अद्‌भुत नूतन मंदिर भुज में निर्मित हुआ । जिस मंदिर में ता. १८-५-१० वैशाख शुक्ल-५ के दिन सुवर्ण सिंहासन पर अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति स्वयं परमात्मा श्री नरनारायणदेव बिराजमान हुये । इस प्रसंग पर ता. १४-५-१० से ता. २३-५-१० तक विशाल उत्सव मनाया गया था । इस नूतन मंदिर का दर्शन करते ही ऐसा लगता था कि मूल संप्रदाय का गौरव खूब बढ रहा है । परंतु साथ में ही श्रीजी महाराजने आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री को जो वचन दिया था वह याद आता है । आप चिंता मत करना हम आपके साथ हैं । यह नरनारायणदेव का देश भले सूखा रहेगा परंतु भविष्य में खूब वृद्धि होगी । श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के वर्तमान पीठाधिपति प.पू. आचार्य महाराजश्री भी कितने उदार हैं उत्सव के असवर पर १० दिन तक उपस्थित होकर सभी संत-हरिभक्तों को सुख प्रदान किया । दूसरी विशेषता यह है कि श्री लक्ष्मीनारायणदेव पीठ स्थान के विद्यमान आचार्य महाराजश्री भी इस प्रसंग पर उपस्थित होकर आशीर्वाद दिये थे ।

ता. १८-५-१० को प.पू. बडे महाराजश्री - अपने मुख्य मंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदी जब इस पद पर प्रथमवार निर्वाचित होकर आये उस समय अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आये थे और हम दोनो साथ बैठकर भोजन का प्रसाद लिये थे । इनकी बात में हमें एक विशेष आनंद हुआ था, मै इन्हें साहब कह कर सम्बोधित करता था । उस समय उन्होंने कहा कि महाराजश्री आप बहुत बड़े है । इसलिये आप हमें साहब नहीं कहें । उस समय श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ आये तो इनके पद का बड़े लम्बे समय के लिये चार्जिग हुआ था । आज भुज श्री नरनारायणदेव के नूतन मंदिर में प्रभु का दर्शन किये तो विशेष रिचार्जिंग होगयी । महाराज भुज तथा अहमदाबाद दोनो मंदिर में श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये थे । नरनारायणदेव की मूर्ति में से तेज प्रगट होता ही है साथ में यहाँ के मंदिर के शिखर से भी तेज निकल रहा है । इन शिखरों को देखकर लोग श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ आयेंगे । ऐसे इस अद्‌भुत मंदिर में यहाँ के संत हरिभक्त उत्तम सेवा किये हैं । सभी

धन्यवाद के पात्र है। इसी तरह देव का स्थायी ख्याल रखना ऐसी महाराज के चरणों में प्रार्थना।

ता. २३-५-२०१० प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री : गंगा नदी में स्नान करने मात्र से पाप धोआता नहीं है। बल्कि स्नान करने के बाद भी गंगा मां को हृदय में रखकर लेजाने से पाप धोजाता है . इसी तरह इस उत्सव में दूर-दूर से आये है और इस उत्सव को हृदय में रखकर नहीं जायेंगे तो पुरुषार्थ सार्थक नहीं होगा। इसलिये इसका चिन्तन करते हुये अपने अपने स्थान पर जाइयेगा। इस मंदिर निर्माण में जो भी संत-हरिभक्त, सां.यो. बहने, तथा अन्य स्वयं सेवक भाई-बहन इस कार्य में सेवा किये है वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। कितने स्वयं सेवक अपने कार्य में कर्तव्य निष्ठा में सभा मंडप भी नहीं देखे होंगे। उनकी सेवा का लेखा जोखा भले हम यहाँ न किये हों परंन्तु महाराज के यहाँ यह लिखा जा चुका है।

कितने लोगो का किसी राजकीय पुरुष के साथ पहचान हो जाती है तो वह कालर ऊँचा करके चलने लगता है। जमीन से १ फुट ऊपर से चलने लगता है। उसकी अपेक्षा हम सभी अनंत कोहि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हैं, उनके साथ संबन्धहै। फिर भी हम गर्व नहीं करते। हम भगवान की संतान है, स्वामिनारायण भगवान हम सभी के पिता है। हम सभी भगवान स्वामिनारायण का होकर रहें, नरनारायणदेव का होकर रहें। प्रत्येक कार्य में भगवान को केन्द्र में रखना चाहिये। दुकान करें या आफिस उसमें भी भगवान को केन्द्र में रखना चाहिये। हृदय में रहने वाले मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ये सभी अन्तः शत्रु हैं, इन्हें भगवान की वात अच्छी नहीं लगती। लोगों की निंदा करना या सुनना सभी को अच्छा लगता है। न देखने का दृश्य देखने को मन करता है। कथा प्रसंग से यह देखता है। अन्य क्या करता है उसे देखे विना हम क्या करते हैं वही देखना ठीक है। पुस्तकों को घर मे लेजाकर रखने के लिये नहीं होती विमोचन के समय फोटो खिचाने से काम नहीं होता। सत् शास्त्रों का उपयोग करने से धर्म, भक्ति तथा संस्कार बढता है। टाइम न होतो गाड़ी में या घर काम करते समय कैसेट से कथा सुनी जा सकती है।

महाराजने शास्त्रों का निचोड़रुप शिक्षापत्री हम सभी को दिया है। निरन्तर वांचते रहने से भी बहुतकाम नहीं होता। हम प्रतिदिन गाते है कि ''काल करम थी छूटी'' जनरल नियम तो यह है कि कोई काल-कर्म से छूट ही नहीं सकता। इसी तरह कर्म से भी कोई छूट नहीं सकता। भोगना ही पड़ता है। परंतु हमें जो भगवान मिले हैं वे विधिके लेख को भी मिटादेने वाले हैं। ऐसे भगवान के साथ संबन्धहुआ, शिक्षापत्री मिली उसी आज्ञा में रहने से ही सुख है। शिक्षापत्री वचनामृत, सत्संगिजीवन अथवा नंद संतो की वात में सत्संगियो के सुख की बात की गयी है। अपने गुरु रामानंद स्वामी से श्रीहरि ने वरदान मांगा था। महाराज ने कहा, इस उद्धव संप्रदाय के सत्संगीको एक बिच्छू के डंक की वेदना होती है तो वह वेदना हमें करोडो बिच्छू की वेदना जितने मुझे मिले सत्संगी को नहीं। दूसरी तरफ अन्न-वस्त्र से हमारे सत्संगी दुःखी न हों यह वरदान भी रामानंद स्वामी से मांगा था। अभी अक्षरप्रकाश स्वामीने वृक्षों को लगाने की वात की वह हमें बहुत अच्छा लगा। आज पर्यावरण की बहुत आवश्यकता है। आप सभी श्री नरनारायणदेव को मध्य (केन्द्र) में रखकर कार्य करेंगे तो सुखी होंगे। महाराज आप सभी को सुखी करे। ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणकमल में प्रार्थना।

रहो एकादश नियम में, करो हरिपद प्रीति परस्त्रिया संग को त्याग

- शा. अभयप्रकाशदासजी गुरु स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

भगवान स्वामिनारायण ने स.गु. प्रेमानंद स्वामी को इग्यारह नियम बताये थे, जिसमें सर्व प्रथम "हिंसा न करवी जंतु की" यह था, अब दूसरा नियम परस्त्रिया संग नो त्याग का उल्लेख करते हैं।

परस्त्री तथा पर पुरुष कौन ? सामाजिक तथा धार्मिक दृष्टि से जो स्त्री-पुरुष विवाह ग्रन्थी से जुड़े हो वे पति-पत्नी कहे जाते हैं। इसके अलांवा सभी पुरुष-स्त्री पराये (अन्य) कहे जायेंगे। कितने लोग गणिका को पर स्त्री नहीं मानते। इसे भी शास्त्र मान्यता नहीं देता। दुनिया की जितनी स्त्रियां हैं सभी पर स्त्री कही जायेंगी। इसी तरह परिणीत पुरुष के सिवाय अन्य पर पुरुष कहे जायेंगे। जो संसार में रहकर एक पत्नी वाला होता है उसे एक पत्नी व्रतधारी कहते हैं। वह साक्षात् भगवान राम के परिवार का कहा जायेगा। इससे पवित्र परिवार वाला कोई नहीं हो सकता। अपने संत कहते हैं कि जो एक पत्नी धारी पुरुष हो वह त्यागी के समान है। अपनी भारत भूमि पर ऐसे अनेकों पवित्र पुरुष हुये हैं, उसी तरह आज भी कुछ प्रतिशत में विद्यमान हैं। इन्हें त्यागी के समान माना गया है। परस्त्री का त्याग किस तरह का होना चाहिये इस प्रसंग का वर्णन कवि झवेरचंद मेघाणी ने अपनी पुस्तक "सोरठी बाहार बटिया" में किया है। सोरठ प्रदेश के चरखा नामक गाँव में क्षत्रिय कुल में इ.स. १८३५ में सूर्यनारायण के भक्त चांपराज नाम के एक भक्त थे। वे लूटपाट करते थे। इन्हें पकड़ने के लिये अंग्रेज सरकार खूब प्रयत्न की लेकिन सफलता नहीं मिली। संयोगवश अंग्रेज सरकार को यह पता चला कि चांपराज का मित्र जेतपुर के राजा हैं। उनके यहाँ से उसे सहायता मिलती रहती है, इस लिये अंग्रेज सरकार ने उनके ऊपर दबाव डाला कि यदि चांपराज को सरकार के हवाले नहीं करेंगे तो आपका राज्य जप्त कर लिया जायेगा। यह समाचार सुनते ही चांपराज मित्र के यहाँ जाकर कहने लगा कि आप हमें सरकार को सौंप दीजिये। अन्यथा आपका राज्य अंग्रेज सरकार जप्त करलेगी। राजा ने अपने मित्र की रक्षा के लिये राज्य चला जाय लेकिन मित्र को नहीं सोंपने का वचन देदिया। यह सुनते ही चांपराज स्वयं अंग्रेज सरकार को समर्पित होगये। अंग्रेजी सरकार उन्हें अहमदाबाद के जेल में डाल दिया।

उस जेल में कुछ समय बीत गया। एक दिन उसी

जेल में देखा तो सभी जेल कर्मचारी दौड़ा दौड़ी कर रहें हैं। उसका कारण चांपराज ने पूछा तो एक कर्मचारी ने बताया कि जेलर साहब की पत्नी को प्रसूती होने वाली है, दर्द होता है लेकिन प्रसव नहीं हो रहा है। ऐसा कहकर वह जला गया।

इधर जेलर नाना उपचार किया बड़े-बड़े वैद्य-डाक्टर आये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। सभी आश्चर्य में पड़ गये। जेलर की पत्नी जोर-जोर से चिल्लाने लगी। आवाज सुनकर चांपराजने एक सैनिक से कहा कि भाई जेलर साहब से जाकर कहो कि आप

(अनुसंधान नं. ११ पर)

बिजापुर की वजीबा

- प्रो. महादेव धोरीयाणी (राजकोट)

भगवान के दृढ भक्त कैसे होते हैं उसका सुंदर तथा हृदयस्पर्शी चरित्र विजापुर की बजीबा का है। उन्हे महाराज की महिमा का जब ख्याल आया तब भगवान से भवसागर पार होने की विन्ती की। भगवान की जो निष्काम भक्ति करते हैं वे सिद्धियों से भी श्रेष्ठ फल को प्राप्त करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में कहीं न कहीं भक्ति तो रहती है। बजीबा को आखिरकार अन्त में भगवान की समझ होती है और वे भगवान में आत्म समर्पित हो जाती है। वजीबा ने भगवान की भक्ति का आनंद प्राप्त करने के बाद संसार कभी भी उन्हें आकर्षित नहीं कर सका। भक्ति गंगा में स्नान करने के बाद वे एक निष्ठ भक्त बन गयी थी। भगवान के दर्शन के बाद उन्होंने अपने में दोष देखा तो उनके मन में एकभाव आया कि अब प्रभु की मेरे ऊपर कृपा होगयी है।

जीवन में चाहे जितने चमत्कार दिखाई दें लेकिन भक्त भगवान की दृढ भक्ति से डिगता नहीं है वह अडिग रहता है। भगवान की उस भक्त की कसौटी करते हैं। दृढ भक्त उस कसौटी से पार भी हो जाता है। विजापुर में बजीबा भगवान स्वामिनारायण की अनन्य भक्ता थीं प्रारंभ में गेरवा वस्त्र धारण करने वालों को भगवान मानकर पूजती थीं, उन्हें भांग, गांजा, तमाकू जो भी चाहिये देती थी। बजीबा की उपेक्षा इस संप्रदाय में लक्ष्मणकी पत्नी उर्मिला की तरह हुई है। फिर भी वे अपने घर आने वाले सभी साधुओं की आवभगत करती थी, साधुलोग भी उन्हीं के घर रुकते और वे सेवा करती थीं।

उन्हें एसी समझ थी की गेरुवा वस्त्र धारण करने वालों में भगवान का वास रहता हैं। उनके भीतर दोष देखना पाप है। एकबार स्वामिनारायण भगवान के संत रामदासजी स्वामी वीजापुर गये। बजीबा उन्हें

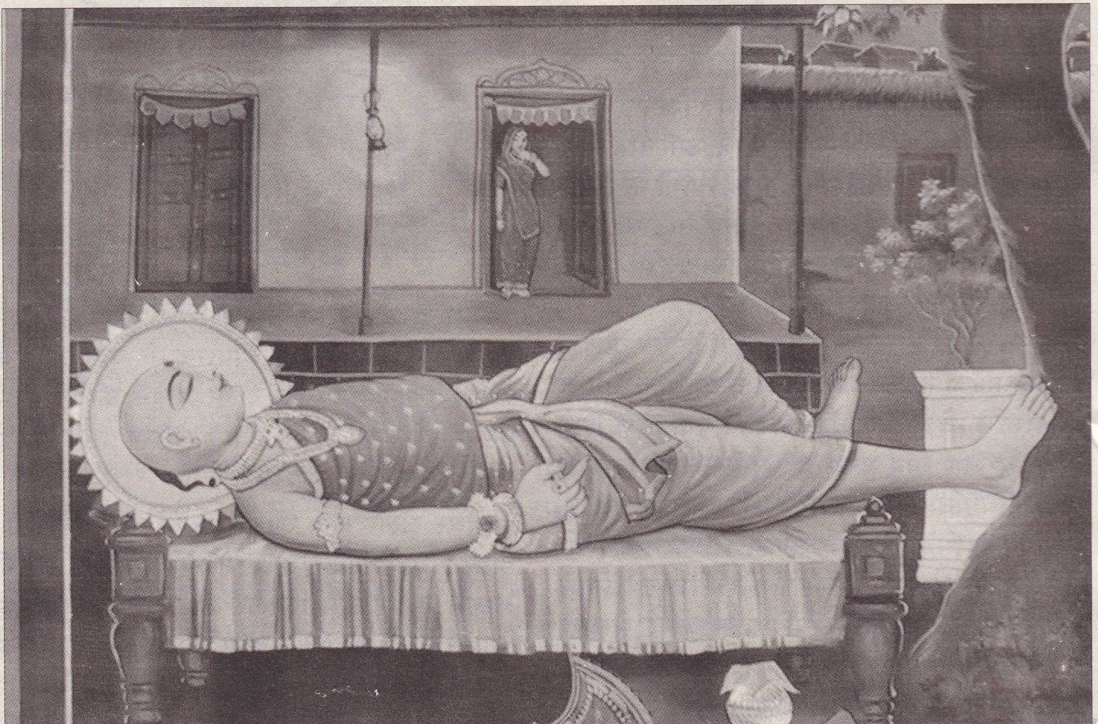

अपने घर १२ दिन तक रोककर सेवा की। स्वामीजी बजीबा के पति से स्वामिनारायण भगवान की महिमा बताये। जब स्वामिनारायम भगवान की महिमा का गुणगान करते उस समय बजीबा परदे के पीछे से सब सुनाकरती थी। इसलिये पति पत्नी दोनो सत्संगी हो गये।

बजीबा के जीवन में आमूलपरिवर्तन हो गया। अब वे कोई ऐसा साधु जो चीलम, गांजा, भांग, बीड़ी वाला आता तो उसे ठहरने नहीं देती थी। वे अभी महाराज का दर्शन नहीं की थी। परंतु महाराज की आज्ञा में तथा शिक्षापत्री के आदेश में अपना जीवन विताने लगीं। भगवान दूर थे, इसलिये भगवान को ध्यान के मार्ग से सतत चिन्तन करते हुये भगवान को नजदीक रखती थी। रामदास स्वामीने इन दम्पती को समझाया था कि निर्विचार ध्यान साधना का परम लक्ष्य है। ध्यान जीवन की सबसे बड़ी कला है। मोक्ष प्राप्ति के किये परम सहायक है। ध्यान प्रेम की गति है। इसलिये ध्यान, ध्याता तथा ध्येय इन तीनो का समन्वय आवश्यक है। स्नान से शरीर की शुद्धि, दान से धन की शुद्धि, ध्यान से मन की शुद्धि होती है।

एकबार बजीबा की परीक्षा करने महाराज स्वयं उनके घर पधारे। बजीबाने कहा यहाँ रहने की व्यवस्था नहीं होगी। तुझे अपना कल्याण करना हो तो स्वामिनारायण भगवान का आश्रय ले।

अरे! वह तो पाखंडी है, वह भगवान नहीं है, कोई मूर्ख तुम्हें भरमादिया है।

''यदि तूं स्वामिनारायण का खराब बोलेगा तो तुम्हे तथा तुम्हारे इस शिष्य का गला पकड़कर बाहर फेंक दूंगी। अब नहीं बोलेंगे, हमें यही एक रात्रि का आश्रय दे दो। ऐसा कहकर महाराज वहाँ रुके। भगवान ने नया गद्दा-तकिया, तख्ता इत्यादि मांगा। बजीबा को आश्चर्य हो गया कि इन्हें कैसे मालुम।

महाराज अपने पैर को लम्बा किया तो पीपड़ा में जाकर लगा। आवाज हुई बजीबा खिड़की से देखी तो पैर में से प्रकाश निकल रहा था। वह चमत्कार देखकर बजीबा को बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर भी मन भगवान में ही दृढ रहा। महाराज प्रातः होते ही उठकर चले गये।''

कुछ समय बाद बजी बा महाराज के दर्शनार्थ गढपुर गयीं चरण स्पर्श करने लगी तो महाराजने कहा बजीबा जो चरण पीपड़ा से टकराया था क्या वहीं यह चरण है। यह सुनकर बजीबा लज्जान्वित होगयी।

महाराज! मैं आपको पहचान नहीं पाई। आपका तिरस्कार की! आप माफ कर दीजिये।

सभा में महाराजने बजीबा की सराहना करते हुये कहे कि बजीबा की तरह सभी को दृढ भक्ति करनी चाहिये। बीजापुर में बजीबा का घर प्रसादीके स्थल के रुप प्रख्यात है।

पेज नं. ९ से आगे **रहो एकादश नियम में, करो हरिपद प्रीति परस्त्रिया संग को त्याग**

कहें तो चांपराज प्रसव करा दे। जेलर को हुआ कि चांपराज शत्रुभाव के कारण मेरी पत्नी को मारडाले तो। यह समाचार चांपराज सुनते ही कहा कि मैं उनकी पत्नी की तरफ देखूंगा भी नहीं। हाँ इतना अवश्य करना होगा कि मुझे नदी तक जाने की छूट दीजाय। मैं बचन देता हूं कि भागूंगा नहीं। जेलर परेशान था इसलिये उसे आदेश दे दिया। चांपराज एक पात्र लेकर नदी किनारे जाकर स्नान करके अपने वस्त्र को गार कर उस पात्र में निचोया। उसी पानी को पिलाने के लिये कहा, ऐसा ही किया गया। ज्योंही मुख में दो बूंद पानी गया कि दर्द बन्द हो गयी और प्रसव भी सरलता से होगया। सभी उपस्थित डॉक्टर-वैद्य आश्चर्य में पड़ गयें और पूछने लगे कि भाई आपने इस पानी में क्या डाला था जो हम सभी के उपचार से संभव नहीं हुआ वह दो बूंद पानी से होगया। तब चांपराज ने कहा पानी में कुछ नहीं था। मात्र स्नान करके वस्त्र गार कर भगवान से प्रार्थना की थी कि हे भगवान यदि मैं अपने जीवन में परस्त्री को खराब दृष्टि से देखा न हो तो उस स्त्री की पीड़ा दूर करके प्रसव सरलता से हो जाय ऐसा कीजिये।

इसे कहा जाता है पर स्त्री संग का त्याग। वह चांपराज भले संसार के सामने लुटारा था लेकिन उसके हृदय में परस्त्री के त्याग की उत्तम भावना थी। इसलिये उसे महान कहा जा सकता है।

अत्यंत भव्य तथा दिव्य ढंग से संपन्न भुज के

श्री नरनारायणदेव नूतन मंदिर का महामहोत्सव

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट (भुज-कच्छ)

श्रीजी महाराज जिन मूर्तियो को अपनी बांह में भरकर प्रतिष्ठित किया था उसमें श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज भी है। जिसकी पुनः प्रतिष्ठा १५-५-१० से २३-५-१० तक श्री नरनारायणदेव के नूतन मंदिर की गयी थी जिसमें लाखों की संख्या में भक्तजन उपस्थित थे। इस कार्य क्रम में स्वच्छता, अनुशासन, व्यवस्था इतनी सुंदर थी कि कहा नहीं जा सकता। महाप्रभु के दर्शन में किसी को कहीं तकलीफ नहीं हुई।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री अविरत प्रत्येक कार्यो में उपस्थित होकर महायोग दान दिये थे। इससे प्रत्येक हरिभक्त, संत, महंथ मेहमान आये हुये राजकीय महानुभाव, सामाजिक कार्यकर्ता, मीडिया के प्रतिनिधि, कवि-साहित्यकार सभी को श्रीजी महाराज के अपर स्वरुप का दर्शन होता रहता था। वैशाख महीने की तीव्र गर्मी में ४६ तापमान में शोभायात्रा के समय पांच घंटे साथ में रहकर देश विदेश से पधारे हुये भक्त, कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिये यह तप नहीं था तो और क्या था ?

निमंत्रण को मान देकर गुजरात राज्य के मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ता. १८-५-२०१० को पधारे थे। साथ में श्री नरोत्तम पटेल श्री वासणभाई आहीर तथा अन्य पदाधिकारी उपस्थिर थे। मुख्य मंत्री श्रीने बड़े महाराजश्री का तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का एवं लालजी महाराजश्री का बड़ी श्रद्धा के साथ बंदन किया था। पू. बड़े महाराजश्री ने सम्बोधित किया कि ''श्री नरेन्द्रभाई जब मुख्यमंत्री बने उस समय तुरंत श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में विराजमान श्री नरनारायणदेव का दर्शन करने आये थे। वह आशीर्वाद इतना सफल रहा कि आज पूरे गुजरात में देखा जा सकता है। आज पुनः भुज में श्री नरनारायणदेव का आशीर्वाद ले रहे हैं। यह भी एक सुंदर संयोग कहा जा सकता है। इस प्रसंग पर कन्या शिक्षण हेतु मंदिर की तरफ से महंथ स्वामी ने मुख्य मंत्रीश्री को चेक अर्पण किया था। इस प्रसंग पर मुख्य मंत्रीश्रीने अपने वक्तव्य में श्री स्वामिनारायण भगवान की सामाजिक सुधार की प्रशंसा की थी। कालुपुर मंदिर की भव्यता, रोचकता की बात करते हुये बताया कि ''यह संप्रदाय देश की आजादी में खूब सहयोग किया था। जिसका इतिहास साक्षी है। जब अंग्रेजो के सामने कोई बोल नहीं पाता था उन दिनो इ.स. १८५७

के आन्दोलन में बने हुये कालूपुर मंदिर की कला कृति आज भी यथावत् है। उस समय के महंथ तथा भक्तों ने जो परेशानी उठायी उसकी खूब प्रशंसा किये थे। ता. १८-५-१० वैशाख शुक्ल-५ के शुभ दिन श्री नरनारायणदेव का महाभिषेक प.पू. बड़े महाराजश्री, आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों सम्पन्न हुआ था। अन्नकूट महोत्सव तथा सभी शिखरों पर सुवर्ण कलश एवं ध्वज की स्थापना की गयी थी।''

इस महोत्सव में प्रदर्शनीय का आकर्षण खूब था। मुख्य ६ डोम लगाये गये थे। इन डोम में ३२ खंड खड़े किये गये थे। श्री स्वामिनारायण भगवान के लीला चरित्र का तद्वत् दर्शन हो रहा था ? लाईटका लेजर शो, हिमालय, हाइटेक कृषि मेला, बालनगरी इत्यादि आकर्षण के केन्द्र थे। प्रतिदिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था। महाविष्णुयाग का आयोजन किया गया था। श्री नरनारायणदेव मेगा मेडिकल केम्प का आयोजन किया गया था। मंत्र लेखन, मंत्रजप, अखंड धुन का भी आयोजन किया गया था। हेली कोप्टर से पुष्प वृष्टि भी आकर्षण का केन्द्र थी।

कच्छ के गोशालाओं में हरीधास खिलायी गयी थी। जनरल हास्पिटल, महिला आश्रम तथा अन्य आश्रमो में प्रसाद वितरण किया गया था। सत्संगि महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इस शुभ प्रसंग पर देश-विदेश के नामी-अनामी दाताओं का संमान किया गया था। एकदिन वडताल देश के आचार्य महाराजश्री भी उपस्थित थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, गांधीनगर सेक्टर-२ के महंत पू. ध्यानी स्वामी श्रीहरि स्वरुपदासजी अपने संत मंडल के साथ तथा हरिभक्तों के साथ उपस्थित थे। अपना सुंदर वक्तव्य देकर सभी को भाव विभोर कर दिये थे। गांधीनगर सेक्टर-२३ के महंत स्वामी श्रीहरिकेशवदासजी भी उपस्थित थे। संप्रदाय के दोनो गादी के संत-भक्त पधारे हुये थे। रहने ...... खाने .... पीने ..... सफाई की उत्तम से उत्तम व्यवस्था की गयी थी।

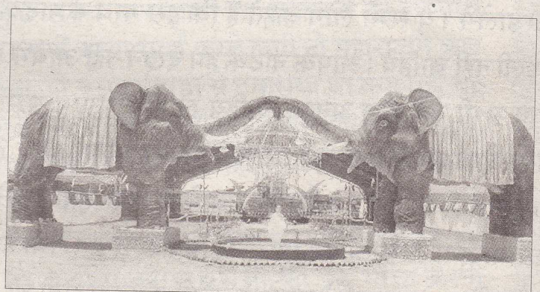

वीडियो कैसेट तथा संप्रदाय का साहित्य इस अवसर पर प्रगट किया गया था।

आगामी साम्प्रदायिक उत्सव

आषाढ शुक्ल-१५ ता. २५-७-२०१० रविवार प्रातः ७-३० को गुरु पूर्णिमा महोत्सव अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपने धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन।

आषाढ कृष्ण-२ ता. २८-७-२०१० बुधवार श्रीहरि बालमुकुन्द को झूले पर झुलाया जायेगा सांय ५-००

आषाढ कृष्ण-१० ता. ५-८-२०१० गुरुवार श्री नरनारायणदेव संस्थान के भावि आचार्य प.पू. श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद में धूमधाम से मनाया जायेगा।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

राख का खिलौना

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

यह वात है लोया गाँव की। जहाँ पर प्रभु ने शाकोत्सव लीला की थी। यह सुराखाचर का गाँव जहाँ पर प्रभु सलाट भक्त के घर पधारे थे। उसी समय कुछ नाटक मंडली वाले आये और आकर सिकायत करते हुये कहने लगे कि महाराज ! आपके सत्संगी हम सभी को भूखे मारडालेंगे। ये सभी लोग कहते हैं कि इस गाँव में नाटक मंडली नहीं चाहिये। आपके नाटक हम देखने नहीं आयेंगे। आप सभी को कुछ अनाज चाहिये लेलीजियेगा। सभी जगह ऐसा हो जाय तो हम लोगों का गुजारा कैसे होगा ? यह कैसी सिकायत ? आज के जमाने में कोई ऐसा कहने आयेगा क्या ? कि आपका सत्संगी पिक्चर देखने गया है, होटल में खाने जाता है ? पहले के लोगों में दृढता होती थी। भगवान में एक निष्ठा होती थी। नाटक, भांड इत्यादि देखने नहीं जाते थे। कोई गाँव में कार्यक्रम हो तो उसका विरोधकरते थे। स्वामिनारायण भगवान ने उनसे पूछा कि आप लोग कौन कौन सा खेल करते हैं। हम कठपुतली का खेल करते हैं। अलग-अलग वेशधारण करते हैं। श्रीहरिने कहा आपलोग कठपुतली का खेल दिखाइये।

कठपुतली के खेल में जो जानकार हो वही खेल करने बैठता है। सभी व्यवस्था हो गयी। एक छोटा तम्बू बनाया। पुतलियों को सजा दिया। स्वयं एक तरफ तटस्थ होकर खड़ा होगया। सभी को खेल दिखाने लगा। उसी समय एक आश्चर्य हुआ। सब कुछ ठीक होते हुये भी पुतली हिल नहीं रही थी। उन सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यों हुआ। उसने पुनः प्रारम्भ किया। इसबार भी वैसा ही हुआ। पुतलियां भीतर खूब अच्छा नृत्य करती थी। उन्हें आशंका हुई कि कहीं अवश्य गड़बड़ हैं। दो-तीन बार प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिली। वे सब आकर प्रभु से कहने लगे हे प्रभु ? जरुर कुछ गड़बड़ है। हम गाँव गाँव घूमकर यह खेल करते हैं कही आज तक ऐसा नहीं हुआ। आज ही क्यों ऐसा हुआ। हमें आप क्षमा करें। महाराजने कहा, अब आप खेल करिये। आज्ञा मिलते ही सभी कठपुतलियां बड़ा सुन्दर नृत्य करने लगी। थोड़ी देर तक नृत्य के बाद महाराज ने कहा अब वश-आपलोग अपना सामान लेकर मेरे साथ चलिये। सभी को भोजन कराये और जो चरणभेंट आयी थी वह सब उन्हें दे दिये। इतना ख्याल अवश्य रखना कि सभी नाड़ी प्रभु के हाथ में हैं। तो सुखी रहोंगे।

मित्रों ! ऐसा ऐश्वर्य दिखाकर प्रभु यह कहना चाहते हैं कि जीवमात्र की नाड़ी प्रभु के हाथ में है। किसी मनुष्य के हाथ में नहीं। "राखना रमकडां मारा रामे रमता राख्यां रे"। सभी जीव राख के खिलौने जैसे हैं। सारा जगत खेलौना है। कोई खेल रहा है, कोई खेला रहा है। कोई गिर रहा है कोई उठा रहा है। कोई छोटा है कोई बड़ा है। इस जगत का खेलौने की तरह व्यवहार हो रहा है।

जीव मात्र कठपुतली है। जिसकी डोरी भगवान के हाथ में हैं। कोई स्वतंत्र नहीं है। प्रभु जैसे नचाते है वैसे सभी नांचते हैं। जब नाटक खेलते हैं तो उसमे कोई राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, ताडुका बनते हैं। लेकिन वह मात्र स्टेज पर ही। नीचे उतरने के बाद कुछभी नहीं। इसी तरह सम्पूर्ण संसार एक स्टेज है। आपके हिस्से में जो भाग मिला हो वह आप खेलो। अब आयु पूर्ण हो जाय तो ऐसा मान लेना चाहिये कि वह स्टेज पर से उतर गया। अपने आप आपका कार्य पूर्ण हो गया। संसार में मामा, काका, दादा-दादी, पुत्र-पिता का रोल करना होता है।

लेकिन सभी की डोरी तो भगवान के हाथ में होती है।

• •

प्रभु का प्रतिभाव

– साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

ब्रह्ममुहूर्त का समय है, उसी समय कुछ घुड़सवार आ पहुंचे हैं। वे घुड़ सवार सामान्य नहीं थे। घोड़े भी उत्तम कोटी के थे। ऐसे घुड़ सवार जो राजा महाराजा थे, वे गाँव के बाहर आकर खड़े रहे। उसमें से एक घोडी थी। उसका नाम था माणकी। वह बहुत चतुर थी इशारे को भी समझती थी।

माणकी घोड़ी का नाम सुनकर आप समझगये होंगे की उसके असवार कौन हो सकते हैं। ''माणकिये चड्या रे मोहन वनमाली'' श्रीजी महाराज तथा अन्य काठी दरबार घुड़ सवार थे। श्रीजी महाराज ने कहा प्रातः काल का समय है। इस समय घोड़े पर सवार होकर गाँव में प्रवेश करना ठीक नहीं। श्रीजी महाराज दो पार्षदो को साथ लेकर गाँव में गये। महाराज ! इस गाँव में हमलोग क्यों जा रहे हैं ? महाराजने कहा, इस गाँव में भी हमारा एक भक्त है। उसे दर्शन देने। वह अभी जगा ही नही होगा तो, वह जगा नहीं होगा तो उसे जगायेंगे।

श्रीजी महाराज तथा दोनो पार्षद उस भक्त के घर पहुचे। श्रीजी महाराज एक पार्षद को कहे कि सीकड़ खखड़ाइये। पार्षद ज्योंहि सीकड़ खखड़ाने को हाथ उठाया कि उसके पहले ही स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, हे दीन बन्धु हे महाराज ! हे कृपा सिन्धु! हे स्वामिनारायण भगवान, इस तरह की हृदय स्पर्शी आवाज घर में से आ रही थी। उस समय स्वयं श्रीहरि अपने हाथों से सीकड़ खखड़ाकर कहे कि खोलो भक्तराज ! भक्त को एकबार आश्चर्य हुआ। यह आवाज हमारे इष्टदेव की है या भ्रम। इतने में श्रीहरि पुनः दूसरी बार आवाज किये। भक्तराज खोलो ! भक्त के आनंद की सीमा न रही। देखा तो महाराज पार्षदों के साथ सामने खड़े है। हे महाराज ! मैं कितना भाग्यशाली हूँ मुझे आप ब्रह्म मुहूर्त में आकर मेरे घर दर्शन दिये। महाराज इतने सबेरे आप कहां से ? भक्त मुझे बुलाया मैं आगया।

हे भगवन् ! हे दयासिन्धु ! मेरी ऐसी आदत है। कृपालु ! प्रातः आंखे खुलने के साथ आपकी याद करता हूँ।

यह सुनकर श्रीहरिने कहा हे भक्त ! हमारी भी ऐसी आदत है जो ब्रह्म मुहूर्त में मेरी याद कता है हम उसके दरवाजे पर दर्शन देने पहुंच जाते हैं। कैसी अद्भुत बात ! कैसा प्रेरणादायी प्रसंग ! इस लिये सभी लोग अपने जीवन में इतना अवश्य याद रखना –

''शाक मां मीठुं भुलावुं न जोईये,
शून्य नी आगळ एकडो भुलावो न जोइये।
जानमां वरराजा भुलावा न जोइये,
अने जिंदगी में भगवान भुलावा न जोइये।''

चाहे कितनी ऊंचाई पर भगवान का मंदिर हो, पहाण पर क्यों न हो हजार सीढी हो तो भी एक-एक सीढ़ी चढकर मंदिर तक पहुँचकर भगवान का दर्शन किया जा सकता है। इसी तरह जिंदगी में नियम-निश्चय के साथ आगे बढते रहेंगे तो, भगवान दयालु है – वे आगे आकर दर्शन देंगे। प्रातः काल में इष्टदेव के स्मरण की बहुत महिमा है। इसी लिये प्रेमानंद स्वामी ने लिखा है कि –

''प्रात समे उठी पुरुषोत्तम नी मूरति मां मन धरिये रे,
ए अवसरे जे आड करे तेने, पापजाडी पर हरिये रे ॥''

''भजन में सच्चा भाव हो तो प्रभु का प्रतिभाव अवश्य मिलेगा।''

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीके आशीर्वचन में से "मोक्ष माटेनी प्रगति सूक्ष्म शरीर थी."

संकलन - कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

मोक्ष के लिये अपना सच्चा पुरुषार्थ सूक्ष्म शरीर में से होता है। अर्थात् नूतन जो कर्म वह बाद में कर्मफल को देने वाला होता है। जिसे वर्तमान में क्रियमाण कर्म के रुप में जानते हैं। वह सूक्ष्म शरीर से होता है। इसमें परिवर्तन किया जा सकता है। इसके लिये प्रयत्न करना भी चाहिये। इसके लिये एक उदाहरण देकर समझाना है। एक स्थान पर एक गणिका रहती थी, वह नाचने का काम करती थी। ठीक उसी के सामने एक महात्मा झुपड़ी बनाकर रहते थे। वह महात्मा उस गणिका को समझाये कि यह जो करती हो वह ठीक नहीं है। इस कर्म के करने से बहुत पाप लगता है। परंतु गणिका इसलिये नाचने का काम करती थी कि उसके आजीविका का यही श्रोत था। जब वह नाचने जाती तब भगवान से क्षमा मांगती कि प्रभु मेरी आजीविका का कोई अन्य श्रोत नहीं है इसलिये यह करती हूँ इसलिये क्षमा करियेगा। पुनः एकबार वह महात्मा उस गणिका को समझायें कि यह गलत है, यह बन्द करदे। फिर भी वह अपना नाचना बन्द नहीं की। अब वह महात्मा उस गणिका के यहाँ जाने वालों की गणना करने के लिये एक-एक पथ्थर बगल में रखने लगे। ऐसा करने से पत्थरों का ढेर हो गया। वे महात्मा उस गणिका को बुलाकर कहे कि देख यह तेरे पाप का ढेर हो गया है। यह देखकर उस गणिका को पश्चाताप होता है। भगवान के पास जाकर मांफी मांगती है। इसके बाद महात्मा की मृत्यु हो जाती है। कुछ समय बाद उस गणिका की भी मृत्यु हो जाती है। उस गणिका को स्वर्ग मिलता है। महात्मा को नर्क का वास मिलता है।

इस बात का ख्याल आते ही महात्माजी धर्मराज से पूछते है, कि ऐसा क्यों हुआ ? पृथ्वी पर मेरी मृत शरीर को अलंकृत करके लोग पूज रहे हैं और अग्नि संस्कार कर रहे है, जब कि गणिका की शरीर को कोई स्पर्श नहीं कर रहा है, कुत्ते उसकी शरीर को फाड़कर खा रहे है। यह सुनकर धर्मराज ने कहा कि आप बाह्य शरीर से कोई खराब कर्म नहीं किये, इसलिये आज आपकी शरीर की पूजा हो रही है। सूक्ष्म शरीर से आप प्रतिदिन गणिका का चिंतन करते थे इसलिये सूक्ष्म शरीर से आप नर्क में आये हैं। जब कि गणिका बाह्य शरीर का उपयोग खराब काम के लिये की तो उसकी बाह्य शरीर को कुत्ते खा रहे हैं। लेकिन सूक्ष्म शरीर से भगवान की प्रार्थना करके क्षमा मांग लेती थी, इसलिये वह स्वर्ग में आयी। घर का त्याग करने से मोक्ष नहीं मिल जाता, कहीं भी एकांत में बैठकर भगवान का नाम लेंगे तो अंदर की वासना खराब काम करने नहीं देगी। इसलिये महाराज ने शिक्षापत्री तथा वचनामृत में जो आज्ञा की है उसका पालन सभी को करना चाहिये, इससे अन्दर की वासना अपने आप टल जायेगी। भगवान तो अपने मा-बाप हैं। एक मां जिस तरह बालक की देखभाल करती है उससे भी अधिक भगवान हम सभी की रक्षा करते हैं। जिस तरह आप लोग अपने बालक को यह कहते हैं कि परीक्षा में इतना प्रतिशत लायेगा तो अमुक वस्तु देंगे। इसी तरह भगवान भी हम सभी के सामने शिक्षापत्री के अनुसार जीवन जीने की शर्त रखे हैं। जो मेरी आज्ञा में रहकर वर्तन करेंगे उनकी रक्षा हर प्रकार से करेंगे। इसलिये श्रीजी महाराज ने जो सत्शास्त्र दिये हैं उन्हें हम अपने जीवन में उतारें तो निश्चित ही मोक्ष के भागी बनेंगे।

•

शांति का मूल हरि स्मरण

- सां.यो. कोकिला बा (सुरेन्द्रनगर)

हरि स्मरण का अद्भुत प्रताप है। प्रभु की फरज है कि वे हमारी रक्षा करें। जब कि जीवात्मा की फरज है कि वह परमात्मा की शरण में जायेगा। प्रभु की आज्ञा में रहे। प्रभु का नाम स्मरण करे। प्रारंभ में हरि स्मरण करना कड़वा लगता है। जिस तरह हर्रे खाने में कड़वी लगती है लेकिन गुण का ख्याल करें तो माता की तरह लाभ कारक है। रोग को मिटाती है और आयु बढाती है। इसी तरह हरि स्मरण

करना प्रारंभ में थोड़ा कठिन अवश्य लगेगा, मन स्थिर नहीं होगा, परंतु जन्म मरण का रोग टल जायेगा। इसलिये श्रद्धापूर्वक प्रभु का स्मरण करना ही शान्ति का द्योतक है। हरि स्मरण करने से मन पवित्र होता है। विचार अच्छे आते हैं।

सुधन्वा परम भक्त था। हंस ध्वज राजा का पुत्र था। प्रातः सायं हरि स्मरण करता। यदि भगवान की ४ घंटे हम याद करें तो भगवान हमारी २४ घंटे याद करेंगे। रक्षा भी करेंगे। भक्त सुधन्वा प्रभु का अखंड स्मरण करता है। हंस ध्वज राजा के राज्य में दीवान थे। वे दोनों कपटी, कुसंगी तथा निर्दयी थे। वे दोनो साथ मिलकर प्रति दिन राज्य में से चोरी करते थे। उन दोनो ने विचार किया कि राजकुंवर सुधन्वा को पता चलेगा तो वे राज्य में से निकाल देंगे। राजकुंवर की मृत्यु हो जाय ऐसी कोई उपाय करते हैं। समय वीतते सभी से परामर्श लिया जाने लगा। दीवानजी ने राजा से कहा ''देश देशान्तर से मनुष्यों को बुलाया जाय।'' सभा की जाय। प्रातः होते ही सभी सभा में उपस्थित हों। जो सूर्योदय तक सभा में उपस्थित नहीं हो, उसे गरम तेल में डाल दिया जाय। ऐसी बुद्धि लगाकर दीवानजी प्रसन्न होता है क्योंकि लेट आने पर सुधन्वा को भी गरम तेल में डाल दिया जायेगा, उसकी मृत्यु हो जायेगी, हम लोगों का कांटा निकल जायेगा।

राज्य में प्रचार कर दिया गया कि सभी को सभा में सूर्योदय से पहले उपस्थित होना है जो बिलम्ब से आयेगा उसे गरम तेल में डाल दिया जायेगा। यह समाचार राजाने सुधन्वा से कहा, उसने भी स्वीकार कर लिया मैं सूर्योदय से पहले पहुंच जाउँगा। प्रातः होने से पूर्व स्नान-पूजा करके माला फेरने लगा। प्रभु के चिन्तन में इस तरह खोगया कि उसे ख्याल रहा ही नहीं। सभी लोग सभा में चले गये। सुधन्वा ध्यान में बैठा गया। राजा हंसध्वज विचार में पड़ गये कि समय से आ जाना लेकिन पुत्र अभी तक आया नहीं। राजा चिंतित हो गये। मन ही मन प्रभु का स्मरण करने लगे। हे प्रभु! आप ही उसकी रक्षा कर सकते हैं।

सुधन्वा हरि स्मरण करके उठा तो १० बज रहा था। अरे! बड़ा विलम्ब होगया, पिताजी राह देखते होंगे। दौड़ते हुये पिताजी के पास आकर कहा, पिताजी हमें माफ कीजिये। विलम्ब हो गया। हरिस्मरण करने में समय का स्मरण नहीं रहा। अब हमें क्या करना है? राजा ने कहा बेटा नियम के अनुसार दंड तो भोगना ही पड़ेगा। इस गरम तेल में तो बैठना ही पड़ेगा। खौलता तेल, जिसमें से भाप निकल रही है, उसमें बैठना है। लेकिन जिसके रखवाले स्वयं भगवान हैं उसका बाल बांका हो सकता है? दीवानजी सुधन्वा को पकड़कर गरम तेल में बैठा दिया। सुधन्वा भगवान का स्मरण करने लगा। भगवान ने उस खौलते तेल को ठंढा कर दिया। दूसरों को खौलते तेल की भाप दिखाई देती है लेकिन वह शीतल तेल जिसमें बड़ी शांति से बैठकर आंख बंद करके प्रभु स्मरण करने लगा।

दीवान क्रोधकरके बोला, तेल गर्म ही नहीं है। अथवा सुधन्वा के पास कोई औषधिहै, जिससे तेल ठंढा हो गया? दीवान परीक्षण के लिये नारियल उस खौलते तेल में डाला, डालते ही नारियल फूटा और जाकर दीवान के मस्तक पर लगा। तेलवाला नारियल होने से मुख जल गया। आँखे जल गयी। दिखाई देना बन्द हो गया। दुःख की कोई सीमा नहीं। देखते देखते धरती पर गिर पड़ा। स्थिति इतनी बिगड़ी कि भयंकर रोग से ग्रसित हो गया और कुछ समय बीतते मृत्यु को प्राप्त हो गया। जो दूसरे का अनभल करता है वह अपना ही नाश करता है। इसलिये हरि स्मरण ही शांति देने वाला है। सभी के लिये शांति देने वाला है। इसलिये उन्हीं का स्मरण करना चाहिये।

•

भक्तिमाता का अनोखा दर्शन

- धरती कमलेशभाई पटेल (माणसा)

दीपावली हिन्दू समाज का बड़ा पर्व है। इस समय आबाल बृद्ध नरनारी के हृदय में आनंद होता है। आज के नूतन दिन से आत्मीयजनों से मिलकर क्षमा याचना करके नयाजीवन जीने की इच्छा होती है। जीवुबा तथा लाडुबा एवं अन्य स्त्रियां इस पर्व के दिन अन्नकूटोत्सव करने की तैयारी की। पापड़, सेव, मेवा, मिठाई, नमकीन तथा अन्य नाना प्रकार के भोजन की तैयारी की गयी। श्रीहरि बहनो के भोजनालय में जाकर अन्नकूट की तैयारी देखकर बहुत

प्रसन्न हुये। भगवान के सामने अन्नकूट का भोग लगाकर पुनीत पर्व को मनाया गया। बाद में सभी स्त्रियां मिलकर श्रीहरि के साथ सत्संग सभा की और धुन-कीर्तन किया। इस अवसर पर श्रीहरि अपनी भक्ति माता से प्रार्थना किये कि आप इस स्त्रियों की सभा में दिव्यरुप से दर्शन दीजिये। यह सुनकर भक्तिमाता दिव्य रुप में वहाँ प्रगट हुई और सभी से जयश्री स्वामिनारायण की, सभी ने यह आवाज सुनी, सुनकर स्तब्धहो गये।

दोनो बहनों ने कहा कल्याणी ! आप की आवाज सुनकर हमारा हृदय आकृष्ट हो रहा, यद्यपि श्रीहरि के सिवाय अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं। आप कौन है ? हमारी श्रद्धा को ध्यान में रखकर इस सभा में आप प्रगट होइये। भक्तिमाता उस सभा में प्रगट होती है। मोरी बा ने पूछा, आप कौन हैं ? किस हेतु से यहाँ प्रगट हुई हैं।

भक्ति माता ने कहा हे बहनों ? आप लोग हमें नहीं पहचान सकती। मैं भक्तिमाता हूँ आप सभी की सेवा भक्ति से प्रसन्न होकर दर्शन-आशीर्वाद देने पधारी हूँ। भक्तिमाता ने कहा यदि आप लोग धर्म का सहारा लेंगे तो आपके साथ सदा रहूंगी। कारण यह कि मैं पतिव्रता हूँ, इसलिये जहाँ धर्म होगा वहीं भक्ति रहेगी। इसके अलांवा हमारे पुत्र श्रीहरि का जो ध्यान पूजन करेगा उसके यहाँ हम दोनो सदा रहेंगे। बाद में भक्ति माता बहनों को उपदेश देते हुये कहीं कि पति की आज्ञा में रहना यह स्त्री का धर्म है। आप सभी पतिपारायण होकर भजन भक्ति करना। इसी में श्रीहरि की प्रसन्नता है।

इस तरह धर्मोपदेश करके सभी की सम्पति प्राप्त करके भक्तिमाता अदृश्य हो गयी।

•

लाडू की रामायण

आनंदीबहन विष्णुभाई पटेल (गुलाबपुरा)

एक समय महाराज मर्चा का गोला बनाकर भोजन में लेते और संतो को भी खिलाते। भुज में यह क्रम कई दिन तक चला।

एक दिन महाराज संतो की रसोई में स्वयं भोजन परसने लगे, उसी समय कोई अन्य संप्रदाय के महात्माजी पधारे, महाराजने कहा आये महात्मा आप भी पंक्ति में बैठजाइये। वे महात्मा भोजन के लिये बैठ गये। सामने दो लड्डु पड़ा था। उस महात्मा के मन में हुआ कि यह लड्डु सायद महन्थ के लिये होगा, जो भोजन परस रहे हैं वे महंथ होंगे जो भोजन कर रहे है वे उनके शिष्य होंगे। यह विचार कर ही रहे थे कि महाराज ने पुनः कहा महात्माजी आप बैठ जाइये। महात्माने कहा मैं ऐसा तैसा साधु नहीं हूँ, मैं महन्थ के साथ बैठकर भोजन करुँगा। क्योंकि मैं महन्थ के साथ भोजन करुँगा तो लड्डू खाने को मिलेगा। महाराजने कहा ठीक है आप महंथ के साथ प्रसादी लीजियेगा। संत भोजन करके उठ गये, अब महाराज तथा महात्मा दोनों भोजन के लिये बैठे। भोजन परस दिया गया। लड्डू महाराज ने महात्मा को आधार दिया तो महात्मा को हुआ कि महंत लोभी है। लेकिन उस महात्मा को यह पता नहीं कि लड्डू मर्चा का है। उस महात्माने कहा आप तोड़िये मत हमें पूरा देदीजिये। महाराजने कहा हमें पूरा देने में कोई तकलीफ नही लेकिन आपको पूरा खाने में तकलीफ होगी। फिर भी वह साधु अपने पात्र में पूरा रखवालिया। दूसरे लड्डु की लालच में ज्योंहि महाराज प्रथम लड्डू थाली में रखे कि उसे खा गये।

अब क्या कहना ! मुंह से लेकर पेट के भीतर तक भयंकर जलन होने लगी। भगवान के सिवाय इसे कौन पचा सकता है। अब भयंकर जलन की पीड़ा सह नहीं सके, चिल्लाने लगे, यह क्या हुआ। मैं मर जाऊँगा। मेरी रक्षा कीजिये, मुझपर दया कीजिये। साधु आकुल-व्याकुल हो गया। महाराज को दया आई वे सुन्दरजी भाई से घी मंगाकर महात्मा को पिलाये, उससे उन्हें थोड़ी शांति मिली। महाराज ने महात्मा से कहा अब दूसरा लड्डू दूं। अरे प्रभु लड्डू की बात छोड़िये। अब रोटी दीजिये। बाद में महाराज ने साधु को रोटी तथा छाछ से तृप्त किया। महात्माजी के इस कार्य से पूरे भुज में आनन्द हो गया। इसके साथ ही महारज के तपस्वी जीवन का सभी को अनुभव हुआ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव का चन्दन चर्चित दर्शन

श्रीनगर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणादि देवों का तथा अक्षरभुवन में विराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का द्वितीय वैशाख शुक्ल-३ से प्रतिदिन चन्दन के लेप से युक्त दर्शन कराया जाता था । ब्र. पूजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी के मार्गदर्शन में सेवा भावी हरिभक्तों की तरफ से चन्दन के लेप का दर्शन होता था । इतनी असह्य गर्मी में भगवान को शीतलता मिले इस शुभ हेतु से प्रतिदिन प्रति वर्ष चन्दन का लेप किया जाता है । अपने शिखरी सभी मंदिरो में जैसे जेतलपुर, मूली, धोलका, भुज, नारायणघाट, नारायणपुरा, कांकरिया, एप्रोच, सुरेन्द्रनगर, महेसाणा, गांधीनगर, वासणा इत्यादि मंदिरो में चन्दन चर्चित प्रभु का दर्शन होता रहता है। (नारायणमुनिदास)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में अक्षरभुवन में विराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज के चमत्कारिक स्वेद बिन्दु का दर्शन

द्वितीय वैशाख शुक्ल-१० को मंगला आरती के अलौकिक दर्शन का समय श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के अक्षरभुवन में बिराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के स्वरुप में एकाएक प्रस्वेद बिन्दु निकलते ही पुजारी स्वामी तथा अन्य संतो ने देखा वात वायुवेग से चारो तरफ फैल गयी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, पू. श्रीराजा सर्व प्रथम दर्शन के लिये पधारी थी । उस समय अपने दादा के शरीर के प्रस्वेद बिन्दु का दर्शन किये । पीताम्बर भी भीगा हुआ था । शहर तथा गाँव के हरिभक्त समाचार मिलते ही गाड़ी में, वाहन में, पैदल चलकर दर्शन करने पधारे थे । सतत दो दिन तक दर्शन की प्रक्रिया चालू रही । सत्संगी तो दर्शनार्थ आते रहे, साथ में अन्य भी दर्शन करके जीवन को धन्य बनाये थे । इलेक्ट्रोनिक मीडिया तथा दैनिक समाचार पत्र में ऐसा अलौकिक चमत्कार छापकर भक्तों की भीड़ लगादी थी । सर्वोपरि बाल स्वरुप घनश्याम महाराज ने आज के घोर कलियुग में यह बता दिया कि तुमलोग इधर उधर भटकते फिरते हो, माथा टेकते हो, मैं यहाँ साक्षात् विराजमान हूँ । कल्याण तथा मोक्ष इन स्वरुपों में तथा धर्मवंशी आचार्य के रुप में ही निहित हैं । हजारो भक्त इस प्रकार दिव्य तथा अलौकिक दर्शन करके जीवन को धन्य बनाये थे। (गोरधनभाई वी. सीतापरा

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार में भव्यातिभव्य पंचम पाटोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल की आज्ञा से एवं यहा के महन्थ स्वामी श्यामसुंदरदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के महंथ शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी नारायणघाट मंदिर के महंथ स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पंचम पाटोत्सव सां.यो. कानबा तथा सां.यो. मेघनाबा, सां.यो. जयश्रीबा के सहयोग से अ.नि. पुरबाई कानजी हीराणी, सुत मावजी कानजी हीराणी तथा सुरेन्द्रनगर बहनों के सा.यो. धोलीबा, राजकुंवरबा, सां. ऊषाबा, इत्यादि महिला मंडल के यजमान पद पर पाटोत्सव का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में ता. २५-५-१० से ता. २९-५-१० तक श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचाह्न पारायण शा.स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ था । कथा के प्रारंभ में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर अलौकिक दर्शन का लाभ दिये थे ।

ता. २७-५-१० के प्रातः काल ७-०० बजे प.पू. भावि आचार्यश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का अभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती हुई थी । महापूजा के यजमान श्री सांकड़चंदभाई सी. पटेल, जयंतीभाई, दशरथभाई, प्रकाशभाई, को प.पू. लालजी महाराजश्री हार पहनाकर संमान किये थे । समग्र पारायण के समय प.पू. गादीवालाजी, पू. श्रीराजा उपस्थित होकर सभी को दर्शन का लाभ दिये थे । इस प्रसंग पर स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी इत्यादि संत पधारे थे । सभा संचालन कृष्णवल्लभदासजीने किया था । साथ में साधु चैतन्यस्वरुपदासने भी सभा संचालन किया था। (साधु व्रजभूषणदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा धाम में (ता. ईडर) में ५४ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री समस्त धर्मवंशी की आज्ञा से तथा ईडर देश के शिरमोर लालोडा मंदिर के प्रणेता पू. स.गु. शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से तथा उनके व्यवहार कुशल शिष्य स्वा. विश्वप्रकाशदासजी तथा स्वा. बालकृष्णदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान महाप्रतापी श्री घनश्याम महाराज का

५४ वाँ पाटोत्सव लालोडा गाँव के धर्मप्रेमी प.भ. देवचंदभाई लवजीभाई पटेल की चि. सुपुत्री कुमारी रमीलाबहन के शुभ संकल्प से श्रीहरि को प्रसन्न करने हेतु पाटोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था । ता. २६-५-२०१० के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । अन्कूट की आरती उतारकर प.पू. महाराजश्रीने सभी को दिव्य लाभ प्रदान किया । प्रासंगिक सभा में पू. स्वा. घनश्यामजीवनदासजी, अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने प्रेरणादायी प्रवचन किया था । अंत में प.पू. महाराजश्रीने लालाडो के संत मंडल तथा यजमान परिवार तथा समस्त गाँव को अलौकिक आशीर्वाद दिये थे । यजमान परिवार के पटेल डाह्याभाई, देवचंदभाई, विठ्ठलभाई देवचंदभाई तथा सुरेशभाई प्रेमचंद ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । सभा का संचालन शा. वासुदेवचरणदासजीने संभाला था ।

(अतुलभाई डाह्याभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राजस्थान) ८२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराज १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से तथा वाली मंदिर के कोठारी स्वामी हरिप्रसाददासजी तथा महंत स.गु.स्वा. देवप्रसाददासजी तथा संत मंडल की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५ ता. १६-६-२०१० के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिपूर्वक संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर वाली देश के आसपास के गाँव के हजारों हरिभक्त पाटोत्सव प्रारंभ करके धन्य-धन्य हो गये थे ।

वाली तथा मारवाड के हरिभक्तो के प्रेमवश होकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजा ने ऐसी गरमी मे भी पधारकर हरिभक्तो को आशीर्वाद का महासुख प्रदान किया था ।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, जेतलपुर के महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, सिध्धपुर के महंत शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, बीलीया के महंत शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजीने कथा वार्तारुपी प्रवचन का लाभ दिया ।

वाली तथा आसपास के हरिमंदिरो में प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । ठाकुरजी की आरती की थी तथा हरिभक्तों के घर घर पधरामणी भी की थी ।

वाली गाँव तथा आसपास के गाँव के मुंबई में बसे हुए धर्मकुल आश्रित श्री नरनारायणदेव युवक मंडल राजस्थान के सभी युवक तथा युवा हरिभक्तों ने सुंदर सेवा करके प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री को प्रसन्न कर दिया था । यहाँ की समस्त बहनों को प.पू. गादीवालाश्री तथा पू. श्रीराजाने परम आशीर्वाद प्रदान किया था । मारवाड का सत्संग नियम, निश्चय तथा धर्मकुल की आज्ञा में निरंतर तल्लीन रहता है ।

(कोठारी स्वा. हरिप्रसाददासजी वाली मंदिर)

हर्षद कोलोनी (बहनों का मंदिर) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

हर्षद कोलोनी (बापुनगर) भाईओं के मंदिर का २५ वाँ वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती महोत्सव तथा बहनो के नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा इन दोनों प्रसंग के उपलक्ष में ता. २८-५-२०१० से ता. ४-६-२०१० तक पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण तथा महाविष्णुयाग, शोभायात्रा, अन्नकूट, युवानों की मोटर साइकल यात्रा, रात्री कीर्तन भक्ति आदि कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुए थे ।

ठाकुरजी तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शोभायात्रा अति भव्य थी । जिस में गजराज, ऊँट, आकर्षण रुप बने थे । बहनो को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु प.पू. गादीवालाजी पधारी थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों प्रतिष्ठा वेद विधिसे हुई थी । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महन्त स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी, नारायणघाट के एप्रोच तथा निकोल के संत पधारे थे । सभा संचालन मूली के संत सत्यप्रकाशदासजीने किया था ।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद देते हुये बताया कि आप सभी श्री नरनारायणदेव की एक निष्ठा आश्रय रखना । प.पू. महाराजश्री सभी को सत्संग में अपनापन रखने के लिये तथा जाति, प्रदेश भाव भूलकर हम सभी स्वामिनारायण भगवान के है ऐसा भाव दृढ करने को कहा । हर्षद कोलोनी मंदिर की तरफ से इस महोत्सव के

उपक्रम में श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण हेतु बहुत बड़ी सेवा की गयी है । इस के अलांवा श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर संप्रदाय का साहित्य ३०% प्रतिशत डिस्काउन्ट से तथा अपने श्री स्वामिनारायण अंक आजीवन सदस्यों को १००-०० रुपये प्रति सदस्य को डिस्काउन्ट भाव में हर्षद कोलोनी द्वारा दिया गया था । समग्र उत्सव धर्मकुल के निष्ठावान श्री दासभाई तथा ट्रस्टी मंडल एवं सत्संग समाज के सहयोग से, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की प्रेरणा से उत्सव भव्याति भव्य मनाया गया था । पारायण के मुख्य यजमान श्री अरविंदभाई दोंगा तथा अन्य हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में साप्ताहिक धुन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०१० से मार्च २०११ तक का वर्ष श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष के रुप में मनाया जायेगा । इस उपक्रम में हर्षद कोलोनी मंदिर, कर्म शक्ति इत्यादि स्थानो पर अलग-अलग विस्तार में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के आयोजन से प्रत्येक शनिवार को रात्रि में ९ से ११ बजे तक कीर्तन-धुन का आयोजन किया जाता है । ता. २२-५-१० के दिन एप्रोच मंदिर से महंत स्वा. लक्ष्मणदासजी, नारायणघाट से महंत छोटे पी.पी. स्वामी, तथा पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी संत मंडल के साथ पधारे थे । सभी से ज्ञान लाभ मिला था ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रीहरि की १८० वीं अन्तर्ध्यान तिथि ज्येष्ठ शुक्ल-१० को प्रातः ८ से ११ बजे तक महामंत्र की धुन तथा हर्षद कोलोनी के बहनों के मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से दोपहर में १ से ७ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी।

पूर्व विस्तार बापूनगर स्नेह मिलन सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु.स्वा. पी.पी. की तथा दासभाई की प्रेरणा से ता. १३-६-१० को श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष के उपलक्ष्य में हर्षद कोलोनी मंदिर में सत्संग सभा की गयी थी।

शाम को ५-०० बजे कोटेश्वर महादेवजी के पास सभी ने साबरमती नदी में स्नान करके कोटेश्वर गुरुकुल में प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में १ घंटे सत्संग सभा हुई थी । जिस में पूरव पटेल द्वारा कीर्तन भक्ति के बाद पू. शा.स्वा. रामकृष्णदासजी तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने सत्संग की पुष्टि के हेतु प्रवचन किये । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने अपनी बाल्यावस्था के संस्मरणो के साथ आनंद की पलों को बताते हुए आशीर्वाद प्रदान किये थे । एप्रोच मंदिर के संतगण भी पधारे थे ।

(गोरधनभाई सीतापरा)

मुबारकपुरा गाँव में पूज्य बड़े महाराजश्री पधारे थे

यहाँ के मुबारकपुरा गाव में परम पूज्य बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी हरिभक्तों के आग्रह पूर्ण आमंत्रण से पधारे थे । साथ में नारायणघाट मंदिर से स.गु. स्वा. देवप्रसाददासजी तथा महंत स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी आदि संतगण पधारे थे । संतो की प्रेरणा तथा हरिभक्तो के साथ सहकार से नूतन मंदिर का निर्माण हो रहा है । प.पू. बड़े महाराजश्री यहाँ का काम देखकर बहुत ही प्रसन्न हुए थे ।

यहाँ के प.भ. लालभाई केशाभाई पटेल की दादीमां कमलाबा की जीवन चर्या के प्रसंग पर सत्संग सभा का आयोजन प.पू. बड़े महाराजश्री की शुभ निश्रा में हुआ था । जिसमें स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) ने कथावार्ता का लाभ दिया था । अहमदाबाद मंदिर के महंत स.गु.शा. हरिकृष्णदासजीने भी सुंदर प्रेरणात्मक प्रवचन किया था । समस्त गाँव को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये थे। सभा संचालन नारणघाट के महंत शा. छोटे पी.पी. स्वामीने किया था। (जयवल्लभदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (जामफलवाडी रामोल) का तीसरा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा नारणघाट मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से ता. १६-६-२०१० के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । श्री घनश्याम महाराज का अन्नकूट भोग हरिभक्तों द्वारा मनाया गया । पाटोत्सव के यजमान प.भ. भीखाभाई चौधरी बने थे । सभा में स.गु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी, शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल) तथा महादेवनगर से शा.स्वा. आनंदप्रियदासजी आदि संतोने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून कथावार्ता तथा कीर्तन भक्ति करके अन्नकूट की आरती उतारी थी । रामोल तथा महादेवनगर तथा आसपास के हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया था। (शा. चैतन्यस्वरुपदासजी कोटेश्वर गुरुकुल)

जेसंगपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणघाट मंदिर के महंत छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से खाखरिया के जेशंगपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर का प्रथम पाटोत्सव ता. ११-६-१० को धूमधाम से मनाया गया था।

ठाकुरजी के समक्ष २ घंटे की महाधुन के बाद छोटे पी.पी. स्वामीने तथा शा. चैतन्यस्वरुपदासजीने कथा का सुंदर लाभ दिया था। बाद में अन्नकूट की आरती की गयी थी। पाटोत्सव के उपलक्ष्य में रात्रि में धुन-कीर्तन का आयोजन किया गया था। जिस में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी स.गु. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने श्रीहरि की लीला का सुंदर वर्णन किया था। रात्रि में गायन कार्यक्रम में धवलभाई सोनी तथा कीर्तनकार श्री पूरव पटेल इन दोनो कलाकारो ने भक्त के गीत गाकर सभी को आनंदित किये थे। इस भक्तिमय वातावरण का सभी आनंद लेकर जीवन को धन्य बनाये थे। (कानजीभाई जेसंगपुरा)

श्री सहजानंद संस्कारधाम ट्रस्ट विसनगर

श्रीहरि के छठे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से विसनगर में १९९९-२००० से अंग्रेजी माध्यम की स्कूल प्रारंभ की गयी थी। जिसकी देखरेख महाराजश्री द्वारा होती है। श्री सहजानंद ऐलीमेन्टरी स्कूल से प्रारंभ होकर आज श्री सहजानंद हायर सेकन्डरी तक उत्तरोत्तर प्रगति हुई है। वर्तमान में १७०० बालक अभ्यास करते हैं।

दश वर्ष के अन्तराल में स्कूल द्वारा जिलास्तर राज्य स्तर तथा नेशनल स्तर की अलग-अलग स्पर्धायो का जिस में संगीत, ड्रामा, कराटे, स्केटिंग, एथ्लेटीक्स तथा बुद्धि कौशल्य को ध्यान में रखकर स्पर्धात्मक परीक्षा में कुशळता प्राप्त की थी।

इस वर्ष कक्षा ११ सायंस अंग्रेजी माध्मय की स्कूल प्रारंभ होने वाली हैं। जिस के लिये विसनगर तथा अगल बगल के गाँवों के १० वी तक अंग्रेजी माध्यम में अभ्यास पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों को अन्यत्र जाना न पड़े। सत्संगी विद्यार्थीयों के लिये संप्रदाय के सिद्धांतो के साथ होस्टेल में रहने-खाने की व्यवस्था की गयी है।

श्री सहजानंद संस्कार धाम ट्रस्ट के वर्तमान चेरमेन प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा कुशल अध्यापको के पुरुषार्थ से कक्षा-११ सायंस अंग्रेजी माध्यम स्कूल के विसनगर तहसील के संप्रदाय के विद्यार्थियों का भविष्य आशीर्वाद रुप बनेगा।

(उदयनभाई महाराजा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर झूलासण का ३३ वाँ पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदास एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से झुलासण श्री स्वामिनारायण मंदिर के ३३ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ८-५-१० से ता. १२-५-१० तक श्रीमद् सत्संगि भूषण का पंचदिनात्मक पारायण पवित्र अधिकमास में भव्य पोथीयात्रा के बाद जेतलपुर धाम के नवयुवान शा.स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्तापद पर धूमधाम से संपन्न हुआ था। गाँव के भक्त कथा का अलौकिक लाभ लिये थे।

ता. १२-५-१० की सुबह में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री जब गाँव में पधारे उस समय नवयुवान सत्संगियों ने अद्भुत स्वागत किया था। गाँव के बाहर से ही शोभायात्रा निकाली गयी थी। मंदिर में पधारकर सर्व प्रथम ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा मंडप में पूर्णाहुति की आरती उतरे थे। सभा में यजमान परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन किया था।

इस प्रसंग पर जेतलपुर से महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, विश्वप्रकाशदासजी, जमीयतपुरा के घनश्याम स्वामी, महेसाणा मंदि के महंत स्वामी उत्तमप्रियदासजी, को.जे.के. स्वामी, लींबडी से वंदनप्रकाश स्वामी इत्यादि संत पधारे थे। सभी संतो ने धर्मकुल की महिमा का गुणगान किया था। प.पू. महाराजश्रीने भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

बहनों के आग्रह पर इस गाँव में सर्व प्रथम प.पू. गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री पधारकर दर्शन आशीर्वाद का लाभ दी थी।

(प्रकाशभाई तथा पीयूषभाई)

कालीयाणा (त. विरमगाँव)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इस गांव के निष्ठावान हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल इत्यादि हरिभक्तों के सहयोग से प्रथम वैशाख कृष्ण-११ को मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष १२ घंटे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन की गयी थी। बड़ी संख्या में हरिभक्त भाग लिये थे। (सत्संग सेवक)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मरतोली का १८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा से एवं विद्वान कथाकार शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिरका १८ वां पाटोत्सव ता. २३-५-१० को संत हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम के साथ मनाया गया था। पाटोत्सव के यजमान श्री भाईचंदभाई चतुरदास पटेल की तरफ से समूह महापूजा अन्नकूट तथा भोजनादिक व्यवस्था की गयी थी।

इस प्रसंग पर शोकली से रघुवीर स्वामी ईडर से जगदीश स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर अपनी वाणी का लाभ दिये थे। सभा का संचालन को. मणीभाईने किया था।

(सत्यसंकल्पदासजी, श्रीजीप्रकाशदास)

समौ (चौधरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर का ५० वाँ पाटोत्सव ता. ५-६-१० को अ.नि. मफतलाल छगनदास दरजी परिवार के गोविंदभाई की तरफ से संपन्न हुआ था। इस प्रसंग पर महापूजा का आयोजन किया गया था। महापूजा पा. जशुभगत ने करवायी थी। इस प्रसंग का लाभ गाँव के अगल-बगल वालों ने लिया था।

(भीखाभाई कोठारी)

सेजीपुर में भागवत कथा

श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प्रांतीज मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से सेजीपुर गाँव में श्रीमद् भागवत पंचाह्न पारायण सम्पन्न। इस पारायण के कथाकार शा.स्वा. हरिजीवनदासजी थे। सहायक कथाकार स्वा. घनश्यामप्रकासदासजी (माणसा) थे। पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया था। प्रासंगिक सभा में प्रांतिज, ईडर, लेई, अहमदावाद तथा हिंमतनगर मंदिर के संत प्रवचन किये थे।

प.पू. महाराजश्रीने यमजान श्री हालुसिंह तथा चतुरसिंह तथा गुलाबसिंह के साथ सभी परिवारजनों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। उत्सव के सेवा में भाग लेनेवाले श्री पी.के. पटेल तथा हरिकृष्णभाइह्को धन्यवाद दिया गया था।

(श्री दिनेशभाई पी. पटेल सेजीपुर)

डुंगरी गाँव में भागवत कथा

ईडर देश के डुंगरी गाँव में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जगदीश स्वामी की प्रेरणा से त्रिदिनात्मक भागवत दशम स्कन्द का पारायण आयोजित किया गया था।

इस पारायण के वक्ता शा.स्वा. हरिजीवनदासजी थे। अ.नि. रेवाभाई नानजीभाई तथा अ.नि. धूली बहन नानजीभाई पटेल के मोक्षार्थ सुपुत्र क्षी भायचंद्र, गोपालभाई, पोपटभाई तथा राजेन्द्रभाई परिवार ने माता पिता का ऋण समझकर बड़ी उदारता से यह प्रसंग संपन्न किया था।

पूर्णाहुति प्रसंग पर नात-रिस्तेदार सभी का वक्ता द्वारा बहुमान किया गया था। महंत जगदीशप्रसाददासजी तथा भक्ति प्रियदासजी स्वामी (लेई) तथा शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (सोकली) ने सभा में प्रवचन किया था। सभा संचालन वासुदेवचरणने किया था। प्रसंग का आयोजन सत्यसंकल्प स्वामीने किया था।

(चेतनकुमार पटेल नेत्रामली)

वडनगर

ऐतिहासिक तथा धार्मिक नगरी वडनगर में वर्तमान समय में महंत स्वा. हरिसेवादासजी की प्रेरणा से श्री घनश्याम महाराज का हरिभक्तों की तरफ से वैशाख शुक्ल-३ से ज्येष्ठ शुक्ल-१३ तक "चंदन का श्रृंगार" करके पुजारी स्वामी अभिषेकप्रसाददासजीने हरिभक्तों को दर्शन का दिव्य लाभ दिया था।

(शा. नारायणवल्लभदासजी)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

जामसर (हालार) गाँव में सत्संगिभूषण कथा

श्री स्वामिनारायण म्युझियम वर्ष के उपलक्ष्य में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से जामसर मंदिर के रजत जयंती महोत्सव के अन्तगर्त त्रिदिनात्मक सत्संगिभूषण पारायण का आयोजन किया गया था।

इस पारायण के वक्ता शा.स्वा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर) थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था। सभा संचालन शा.स्वा. हरिजीवनदासजीने की थी। गाँव के बाहर वाले सत्संगियोंने तन, मन, धन की उत्तम सेवा की थी। अंतिम दिन प.पू. बड़े महाराजश्री समग्र सभा को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

(अरजवाभाई पोरीया, हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटडी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बहनों की गुरुजी प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की शुभ आज्ञा से पाटडी तथा ट्रेन्ट

के हरिभक्तों के सहयोग से श्री घनश्याम महाराज के रथ के साथ भुज-कच्छ तक के लिये पदयात्रा का आयोजन किया गया था। सां.यो. बहनों के साथ कुल २३४ बहनें थी। ता. ९-५-१० से इस यात्रा का आरंभ किया गया था। ता. १७-५-१० को भुज मंदिर दर्शन करके यात्रा पूर्ण की थी। जिसमें पाटडी, ट्रेन्ट, उभडा, बामणवा, वणोद, नवरंगपुरा, रामपुरा तथा टीम्बा गाँव के हरिभक्त पदयात्रा में भाग लिये थे। भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव का तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का दर्शन करके धन्य हो गये थे। (गोविंदभाई पटेल तथा नारायणजी तलाटी)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल केलेगरी केनेडा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से केनेडा केलेगरी श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल द्वारा चलती सत्संग प्रवृत्ति में जयेश पटेल ने बताया कि यहाँ के उपरोक्त मंदिरों में साप्ताहिक सभा का आयोजन किया जाता हैं।

जिसमें ता. ३-४-१०, ता. १०-४, ता. १७-४, ता. २४-४, ता. १-५, ता. ८-५, ता. १६-५ तथा ता. २२-५-१० को सत्संग सभा हुई थी। जिस में सर्वप्रथम महामंत्र धुन, २७३ वचनामृत, शिक्षापत्री, नित्य नियम, थाल, आरती, कीर्तन इत्यादि का आयोजन समूह में किया गया था। आबाल वृद्ध नर-नारी सभी बड़ी उत्सुकता के साथ इस कार्यक्रम में भाग लिये थे। प्रायः सभी प्रत्येक उत्सव में भाग लेते हैं। श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से थोड़े समय में खूब प्रगति हुई है।

(जयेशभाई पटेल)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अहमदाबाद-मेमनगर : श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान श्री उमेशभाइ आ. याज्ञिक की धर्मपत्नी अ.सौ. कमलाबहन याज्ञिक ता. १५-६-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है। श्रीहरि उनके परिवार को धैर्य प्रदान करें ऐसी प्रार्थना।

नवागांव (जी. खेडा) : श्री चंदुभाई मंगलदास पटेल ता. ३०-५-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

टींबा (मूलीदेश) : श्री पंचाणभाई नथुभाई परमार दूसरे वैशाख शुक्ल-११ ता. २४-५-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

महेसाणा : महेसाणा मंदिर के अग्रगण्य तथा श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान सेवा भावी श्री नटुभाई मोदी के चि. पुत्र श्री जयेशभाई मोदी छोटी उम्र में विमारी के कारण ता. २१-६-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं। उनके परिवार को श्रीहरि आत्मबल प्रदान करें।

अहमदाबाद (सरसपुर) : अ.सौ. सुभद्राबहन नटवरलाल भावसार श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासीनी हुयी हैं।

अहमदाबाद : मोदी कांताबहन गांडालाल ता. २४-५-१० को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अहमदाबाद (सीजीवाडावाला) : श्री बाबूभाई कालीदास मालाणी (ठक्कर) ता. २०-५-१० द्वितीय वैशाख शुक्ल-७ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

अहमदाबाद : श्री विष्णुप्रसाद मोतीलाल कंसारा (ठिसनगरवाला) ता. २४-५-१० श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

करशनपुरा (त.जि. महेसाणा) : श्री रामभाई करशनदास पटेल के पुत्र श्री कल्पेशभाई ता. १३-६-१० श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८०००१ द्वारा प्रकाशित।

(१)

(२)

(३)

(४)

(१) लालोडा (ईडर देश) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री

(२) लालोडा (ईडर देश) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, ईडर के महंत स्वामी, स्वामी अखीलेश्वरदासजी, स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा अन्य संत गण

(३-४) श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका के पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री तथा कार्यक्रम का लाभ लेते हुये यजमान परिवार साथ में धोलका के महंत मुनि स्वामी, ब्र. पुजारी राजेश्वरानंदजी

Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011

गुरु पूर्णिमा

श्री नरनारायणदेव
अमदावाद

गुरु पूजन महोत्सव

प.पूध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

समस्त सत्संग को बताते हुये आनंद हो रहा है कि अपने इष्टदेव परब्रह्म परमात्मा सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने अपने स्थान पर अपने ही दिव्य कुल में से धर्मवंशी परिवार का पूज्य आचार्य महाराजश्री की स्थापना की है । यही श्री स्वामिनारायण संप्रदाय की दिव्य अलौकिक परंपरा है ।

आषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन समस्त हरिभक्तों के तथा संतो के गुरु श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गुरु पूजन का आयोजन किया गया है, इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिये सभी को हार्दिक आमंत्रण है ।

निमंत्रक :
महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद-जेतलपुर में उत्सव

स्थल :
श्री स्वामिनारायण मंदिर,
कालुपुर, अमदावाद-१

मंगल कार्यक्रम :
अषाढ शुक्ल-१५ गुरु पूर्णिमा
ता. २५-७-१० रविवार
प्रात: ७-०० से प्रारंभ

Museum Year
March 2010 - March 2011

Shree Swaminarayan Museum

इ.स. २०१०-११ का वर्ष "म्युजियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युजियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है ।

उद्घाटन ९मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुनसुद तीज श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org

Praful Kharsani